Edit with WPS Office

प्रस्तुति: पूजा भगत

ठेले पर हिमालय

प्रश्न 1. कौसानी की यात्रा में नैनीताल से कोसी तक लेखक का सफर कैसा रहा?

उत्तर- कौसानी की यात्रा में नैनीताल से कोसी तक लेखक का सफर कष्टप्रद था। भयानक-भयानक मोड़ थे और ऊबड़खाबड़ मार्ग था ।

प्रश्न 2. कोसी के आगे जो बदलाव आया उसका मुख्य कारण क्या था?

उत्तर- कोसी के आगे जो बदलाव आया उसका मुख्य कारण था कि प्रसन्नवदन शुक्ल जी मिल गये और उनकी सारी थकान दूर हो गयी।

Edit with WPS Office

प्रश्न 3. कौसानी पहुँचने पर पहले लेखक को अवाक् मूर्ति -सा स्तब्ध कर देने वाला कौन-सा दृश्य दिखायी दिया?

उत्तर- कौसानी के अड्डे पर बस रुकने पर जब लेखक को वहाँ एक उजड़ा-सा गाँव दिखा तो वह खिन्न हो उठा। वहाँ बर्फ का कहीं नामोनिशान तक नहीं था। लगता था जैसे लेखक ठगा गया हो लेकिन जब वह बस से नीचे उतरा तो वह जहाँ था वहाँ पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया यह देखकर कि सामने की घाटी में तो अपार सौन्दर्य बिखरा पड़ा है।

प्रश्न 4. कत्यूर घाटी के पार बादलों की ओट के बीच से दिखता हिमालय का एक श्रृंग उसे कैसा लगा? |

उत्तर- कत्यूर घाटी के पास बादलों की ओट के बीच से दिखता हिमालय का एक श्रृंग लेखक को ऐसा दिखा जैसे वह खिड़की से झाँक रहा है। लेखक प्रसन्नता से चीख उठा 'बरफ'। सभी ने देखा लेकिन अकस्मात् वह फिर लुप्त हो गया।

Edit with WPS Office

(अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

प्रश्न 1. धर्मवीर भारती की दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर- धर्मवीर भारती की दो रचनाएँ- (1) गुनाहों का देवती, (2) सूरज का सातवाँ घोड़ा।

प्रश्न 2. धर्मवीर भारती किस युग के लेखक हैं?

उत्तर- धर्मवीर भारती आधुनिक युग के लेखक हैं।

प्रश्न 3. धर्मवीर भारती का जन्म कब हुआ था?

उत्तर- धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर सन् 1926 ई० को इलाहाबाद में हुआ था।

Edit with WPS Office

(3) बर्फ को पास से देखने के लिये लेखक कहाँ गया?

उत्तर-कौसानी

(3) कौन-सी घाटी थी, जिसमें अनन्त सौन्दर्य बिखरा पड़ा था?

उत्तर-कत्युतर

लपेटकर आँखों से लगा लूंगा।

कत्यूर घाटी में अनन्त सौन्दर्य बिखरा पड़ा था।

Edit with WPS Office

(3) किस समय बर्फ कमल के लाल फूलों में बदलने सी प्रतीत होने लगी?

उत्तर-

गया है। प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने कौसानी की सायंकालीन बेला का चित्रण किया है।

प्रश्न 1. कौसानी की यात्रा में नैनीताल से कोसी तक लेखक का सफर कैसा रहा?

उत्तर- कौसानी की यात्रा में नैनीताल से कोसी तक लेखक का सफर कष्टप्रद था। भयानक-भयानक मोड़ थे और ऊबड़खाबड़ मार्ग था ।

प्रश्न 2. कोसी के आगे जो बदलाव आया उसका मुख्य कारण क्या था?

Edit with WPS Office

उत्तर- कोसी के आगे जो बदलाव आया उसका मुख्य कारण था कि प्रसन्नवदन शुक्ल जी मिल गये और उनकी सारी थकान दूर हो गयी।

प्रश्न 3. कौसानी पहुँचने पर पहले लेखक को अवाक् मूर्ति -सा स्तब्ध कर देने वाला कौन-सा दृश्य दिखायी दिया?

उत्तर- कौसानी के अड्डे पर बस रुकने पर जब लेखक को वहाँ एक उजड़ा-सा गाँव दिखा तो वह खिन्न हो उठा। वहाँ बर्फ का कहीं नामोनिशान तक नहीं था। लगता था जैसे लेखक ठगा गया हो लेकिन जब वह बस से नीचे उतरा तो वह जहाँ था वहाँ पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया यह देखकर कि सामने की घाटी में तो अपार सौन्दर्य बिखरा पड़ा है।

प्रश्न 4. कत्यूर घाटी के पार बादलों की ओट के बीच से दिखता हिमालय का एक श्रृंग उसे कैसा लगा? |

Edit with WPS Office

उत्तर- कत्यूर घाटी के पास बादलों की ओट के बीच से दिखता हिमालय का एक श्रृंग लेखक को ऐसा दिखा जैसे वह खिड़की से झाँक रहा है। लेखक प्रसन्नता से चीख उठा 'बरफ'। सभी ने देखा लेकिन अकस्मात् वह फिर लुप्त हो गया।

(अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

प्रश्न 1. धर्मवीर भारती की दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर- धर्मवीर भारती की दो रचनाएँ- (1) गुनाहों का देवती, (2) सूरज का सातवाँ घोड़ा।

प्रश्न 2. धर्मवीर भारती किस युग के लेखक हैं?

उत्तर- धर्मवीर भारती आधुनिक युग के लेखक हैं।

प्रश्न 3. धर्मवीर भारती का जन्म कब हुआ था?

Edit with WPS Office

उत्तर- धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर सन् 1926 ई० को इलाहाबाद में हुआ था।

प्रश्न 4. हिमालय की शोभा क्या है? |

उत्तर- हिमालय की शोभा बर्फ है।

प्रश्न 5. हिम श्रृंग के क्षणिक दर्शन का उस पर क्या प्रभाव हुआ?

उत्तर- हिम श्रृंग के क्षणिक दर्शन से लेखक की सारी खिन्नता, निराशा, थकावट छुमन्तर हो गयी।

6. पूरी हिम-श्रृंखला देखने पर लेखक के मन में कैसे भाव उदित हुए?

उत्तर- हिमालय की शीतलता लेखक के माथे को छू रही थी। लेखक के मन में भाव उत्पन्न हुआ कि पुराने साधक लोग दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापों को नष्ट करने के लिए हिमालय की शरण में आते थे।

Edit with WPS Office

प्रश्न 7. रात होने पर चाँद दिखायी दिया तब लेखक को क्यों लगने लगा कि जैसे उसका मन कल्पनाहीन हो गया हो?

उत्तर- जब चाँद निकला तो सब शान्त था, जैसे हिम सो रहा हो। लेखक को लगा जैसे उसका मन अत्यन्त कल्पनाहीन हो गया। इसी हिमालय को देखकर लेखक एवं कवियों ने अनेक रचनाएँ कर डालीं । लेखक कहता है -यह मेरा मन है कि मैंने एक पंक्ति भी नहीं लिखी।

प्रश्न 8. बैजनाथ पहुँचकर गोमती में स्नान करते हुए लेखक के मन में हिमालय के प्रति कैसे भाव जगते हैं?

उत्तर- बैजनाथ पहुँचकर गोमती में स्नान करते हुए लेखक के मन में अनेक भाव उत्पन्न हुए। उसे लगा जैसे गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही हो। लेखक कहता है कि पता नहीं उन शिखरों पर कैसे और कब पहुँचूँगा ।

Edit with WPS Office

■हिमालय के बर्फ को चिरंतम हिम क्यों कहा गया है?

उत्तर- हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है और सारे संघर्ष, सारे अन्तर्द्वन्द्व, सारे ताप जैसे नष्ट हो रहे हैं। क्यों पुराने साधकों ने दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था और उसे नष्ट करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे, यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था और अकस्मात् एक दूसरा तथ्य मेरे मन के क्षितिज पर उदित हुआ। कितनी, कितनी पुरानी है यह हिमराशि । जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत, अविनाशी हिम इन शिखरों पर जमा हुआ। कुछ विदेशियों ने इसीलिए इस हिमालय की बर्फ को कहा है-चिरन्तन हिम।

Edit with WPS Office

■इस पाठ के आधार पर भारती जी की भाषा-शैली पर एक लेख लिखिए।

उत्तर- भारती जी की भाषा परिष्कृत एवं परिमार्जित खड़ीबोली है। इनकी भाषा में सरलता, सजीवता और आत्मीयता को पुट है तथा देशज, तत्सम एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा में गति और बोधगम्यता आ गयी है। विषय और विचार के अनुकूल भारती जी की इस रचना में भावात्मक, समीक्षात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक शैलियों के प्रयोग हुए हैं।

■लेखक ने कौसानी गाँव में डूबते सूरज का जो वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर:

सूरज ढल रहा था। दूर स्थित शिखरों पर दरें, ग्लेशियर,

Edit with WPS Office

ढोल तथा घाटियाँ कुछ धुंधली दिखाई दे रही थीं। ग्लेशियरों की बर्फ केसर के समान पीली दिखाई दे रही थी। पर्वत शिखरों पर जमी बर्फ लाल कमल जैसी हो गई थी। कौसानी की घाटियाँ भी पीली दिखाई देने लगी थीं।

■ प्रश्न :कौसानी जाते समय लेखक के चेहरे पर अधैर्य, असंतोष तथा क्षोभ क्यों झलक उठा था?

उत्तर:

लेखक को बताया गया था कि कौसानी बहुत सुन्दर स्थान है। कष्टप्रद, टेढ़े-मेढ़े रास्ते देखकर तथा बर्फ का नामोनिशान न पाकर लेखक के मन में अधैर्य, क्षोभ और असंतोष पैदा हो गया।

■प्रश्न:कोसी तक लेखक किस प्रकार पहुँचा? उसको कोसी में क्यों उतरना पड़ा?

उत्तर:

लेखक नैनीताल से रानी खेत, मझकाली होते हुए कोसी

Edit with WPS Office

पहुँचा। रास्ते में भयानक मोड़ थे। रास्ता बहुत कष्टपूर्ण, सूखा और कुरूप था। पहाड़ सूखे थे। रास्ते में कहीं पानी का निशान भी नहीं था। कहीं हरियाली भी नहीं थी। ढालों को काटकर बनाया गया रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा था। वहाँ से एक सड़क अल्मोड़ा तथा दूसरी कौसानी जाती थी। लेखक की बस अल्मोड़ा जा रही थी। उसको कौसानी जाना था। अत: वह कोसी उतर गया।

■प्रश्न:कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया।" उस दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

उत्तर:

कोसी तक का रास्ता अच्छा नहीं था। कोसी से बस चली तो रास्ते का दृश्य बदल गया, पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसो बह रही थी। उसके किनारे छोटे-छोटे गाँव और हरे-भरे खेत थे। सोमेश्वर की वह घाटी बहुत सुन्दर थी। मार्ग में कोसी नदी तथा उसमें गिरने वाले नदीनालों के पुल थे। एक के बाद एक बस स्टेशन, पहाड़ी, डाकखाने, चाय की दुकानें आदि भी रास्ते में मिले। कहीं-कहीं सड़क

Edit with WPS Office

निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरी। सड़क टेढ़ी-मेढ़ी, ऊँची-नीची तथा केंकरीली थी। उस पर बस धीरे-धीरे चल रही थी। रास्ता सुहाना था।

■प्रश्न:हम अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे।" लेखक को किस विषय में संशय था?

उत्तर:

कोसी से अठारह मील दूर निकल आने पर भी लेखक को कहीं बर्फ दिखाई नहीं दी थी। कौसानी केवल छ: मील दूर हो रह गया था। लेखक को बताया गया था कि कौसानी बहुत सुन्दर है। वहाँ स्विट्जरलैंड का आभास होता है। वह कश्मीर से अधिक मनोहर है। वह इतनी प्रशंसा के योग्य नहीं था। लेखक को संदेह था कि वहाँ बर्फ दिखाई देगी भी या नहीं। यही बात लेखक ने शुक्ल जी से कही थी।

Edit with WPS Office

■प्रश्न:कौसानी पहुँचकर लेखक हर्षातिरेक से क्यों चिल्लाने लगा?

उत्तर:

कौसानी के बस-अड्डे से लेखक ने कल्यूर की सुन्दर घाटी को देखा । दूर क्षितिज के पास कुछ धुंधले छोटे पर्वतों का उसे आभास हुआ। उसके बाद बादल थे। अकस्मात बादलों के बीच उसको कुछ दिखाई दिया। बादल के टुकड़े जैसी कोई अटल वस्तु थी । उसका रंग न नीला था, न रुपहला, न सफेद था। वह तीनों का मिलाजुला रंग था। लेखक ने सोचा-यह है क्या? बर्फ नहीं है तो क्या है? अचानक उसको ध्यान आया कि इसी घाटी के पार हिमालय पर्वत है, जो बादलों से ढका है। वह समझ गया कि उसने बर्फ से ढके किसी छोटे शिखर को देखा है। वह प्रसन्नता के साथ चिल्ला उठा 'बर्फ, वह देखो।'

Edit with WPS Office

प्रश्न

त्रिताप कौन-कौन से होते हैं? हिमालय की शीतलता से वे कैसे दूर हो गए?

उत्तर:

त्रिताप अर्थात् कष्ट तीन प्रकार के होते हैं-दैहिक, दैविक, भौतिक । पुराने साधक इनसे मुक्ति के लिए हिमालय पर जाते थे। हिमालय की शीतलता मनुष्य के शारीरिक कष्टों को दूर करती है। हिमालय का पवित्र वातावरण आत्मिक कष्टों से मुक्ति दिलाता है तथा भौतिक पीड़ा से भी मुक्त करता है। हिमालय की शीतलता, पवित्रता और शांति मनुष्य को त्रितापों से मुक्त कर देती थी।

प्रश्न 2.

हिमालय के पर्वतीय सौन्दर्य में स्नोफाल किस प्रकार

Edit with WPS Office

पर्यटकों को अधिक आकर्षित करता है?

उत्तर:

हिमालय अत्यन्त आकर्षक है। उसके शिखरों पर जमी बर्फ लोगों को सुन्दर लगती है। हिमालय पर जब बर्फ गिरती है तो उसको देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक वहाँ जाते हैं। आसमान से रुई के फाहों की तरह गिरती बर्फ पर्यटकों को रोमांचित करती है। वहाँ बर्फ के खेल भी होते हैं। गिरती हुई बर्फ की प्राकृतिक सुषमा अद्वितीय होती है।

प्रश्न 3.

लेखक ने कौसानी गाँव में डूबते सूरज का जो वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर:

सूरज ढल रहा था। दूर स्थित शिखरों पर दरें, ग्लेशियर, ढोल तथा घाटियाँ कुछ धुंधली दिखाई दे रही थीं। ग्लेशियरों की बर्फ केसर के समान पीली दिखाई दे रही थी। पर्वत शिखरों पर जमी बर्फ लाल कमल जैसी हो गई

Edit with WPS Office

थी। कौसानी की घाटियाँ भी पीली दिखाई देने लगी थीं।

प्रश्न

पर्वतीय क्षेत्रों के प्राकृतिक सौन्दर्य पर एक लेख लिखिए।

उत्तर:

प्रकृति का स्वरूप अत्यन्त रमणीय होता है। नदी, वन, पर्वत, आकाश, समुद्र सभी सुन्दर लगते हैं किन्तु पर्वतीय क्षेत्रों की प्राकृतिक सुषमा ज्यादा मनोहारिणी होती है।

प्रकृति के विविध स्वरूप पर्वतों पर दिखाई देते हैं। एक के साथ एक जुड़ी हुई पर्वत श्रृंखलाएँ, उन पर बने पथरीले रास्ते हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कहीं मजबूत चट्टानें होती हैं तो कहीं कमजोर चट्टानें भी होती हैं। ये चट्टानें एक दूसरे से जुड़कर पहाड़ी शिखरों का रूप लेती हैं। लाल-लाल चट्टानें देखने में सुन्दर लगती हैं। इन चट्टानों पर सीढ़ीनुमा खेत होते हैं। इनमें उगे हुए पौधे हरे-भरे और

Edit with WPS Office

सुन्दर लगते हैं। पर्वतों पर घने जंगल होते हैं। इन वनों में चीड़, देवदार आदि अनेक प्रकार के वृक्ष होते हैं। कहीं-कहीं पर झाड़ियाँ भी पाई जाती हैं। वहाँ हरी-हरी लम्बी घास भी उगती है। इन वनस्पतियों से ढंके होने से पर्वत शिखरों की शोभा द्विगुणित हो जाती है। उनका ऊँचा माथा आकाश को छूता हुआ-सा प्रतीत होता है। इन पर्वतीय वनों में अनेक जीव-जन्तु रहते हैं। छोटे-छोटे कीट-पतंगों से लेकर हाथी, शेर, चीता आदि बड़े-बड़े पशु-पक्षी इन वनों में पाए जाते हैं। ये पशु-पक्षी बड़े मनोहर होते हैं। वनों तथा पशु संरक्षण उद्यानों में इनको देखने अनेक लोग जाते हैं।

पर्वतों पर बहती नदियाँ अपने कल-कल स्वर से हमें आनन्द देती हैं, वहाँ वैसे जलाशयों-सरोवरों में स्वच्छ दर्पण जैसा जल भरा होता है। इनमें पर्वतों की मनोहर छवि दिखाई पड़ती है। पर्वतों की ऊँची चोटियाँ सफेद बर्फ से ढकी रहती हैं। यह बर्फ अत्यन्त सुन्दर होती है। सूर्य और चन्द्रमा के प्रकाश में वह रंग-बिरंगी और चमकीली लगती है। यहाँ सूर्य और चन्द्रमा का उदय और अस्त का

Edit with WPS Office

दृश्य बहुत मनोहर होता है। अँधेरी रात में टिमटिमाते तारों की अपनी अलग ही छवि होती है। पर्वतों पर हिमपात के मनोहर दृश्य को देखने पर्यटक दूर-दूर से आते हैं।

प्रश्न 2.

पर्यटन का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

उत्तर:

विभिन्न स्थानों की यात्रा को पर्यटन कहते हैं। इन यात्राओं के पीछे कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता। किसी स्थान को देखना ही पर्यटन में निहित भावना होती है। पर्यटन धार्मिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से प्रसिद्ध स्थानों का किया जाता है। ये स्थल अपने देश में अथवा विदेश में कहीं भी हो सकते हैं। पर्यटन का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। पर्यटन से व्यक्ति का ज्ञान बढ़ता है। वह जहाँ जाता है, उस स्थान के विषय में तरह-तरह की

Edit with WPS Office

जानकारियाँ उसको प्राप्त होती हैं। पुस्तकों में पढ़कर अथवा चित्रों को देखकर भी किसी स्थान के बारे में ज्ञान मिलता है, किन्तु जो ज्ञान उस स्थल को अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखकर प्राप्त होता है, वह अधिक प्रभावशाली होता है। पर्यटन आनन्द-वर्धक तथा मनोरंजक होता है। नए-नए स्थानों की यात्रा में यद्यपि कष्ट उठाना पड़ता है और धन का व्यय भी होता है, परन्तु उससे प्राप्त आनन्द की तुलना में व्यय धन व समय कुछ भी नहीं है। इन स्थानों पर अनेक दर्शनीय चीजें होती हैं, जो दर्शक के मन को आनन्द से भर देती हैं।

ऐतिहासिक स्थलों, इमारतों, संग्रहालयों आदि को देखना इतिहास सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने से अधिक महत्वपूर्ण होता है। वहाँ जाकर हम उस काल अथवा युग से स्वयं भेंट कर सकते हैं। ताजमहल को देखकर हम उसकी सुन्दरता से ही प्रभावित नहीं होते बल्कि उसको बनाने वाले बादशाह शाहजहाँ के जीवन तथा घटनाओं से भी रूबरू होते हैं। इसी प्रकार धार्मिक स्थलों की यात्रा धर्म में हमारे विश्वास को बढ़ाने वाली होती है। मंदिरों की कलात्मक मूर्तियाँ

Edit with WPS Office

तथा भवन हमारे मन को प्रसन्नता से भर देते हैं।

प्राकृतिक स्थानों यथा पर्वतों, वनों, समुद्र-तटों आदि का पर्यटन अधिक आनन्ददायक होता है। इन स्थानों पर जाकर प्रकृति को निकट से देखने का अवसर मिलता है। पर्वतों की चोटियों पर जर्मी श्वेत चमकीली हिम, वनों में विविध प्रकार के वृक्ष और लतायें, उनमें रहने वाले जीव-जन्तु, समुद्र तट का विस्तार, सूर्य और चन्द्रमा के प्रकाश से प्रभावित जल, उसमें उठती लहरें आदि पर्यटक को बार -बार बुलाते हैं।

पर्यटन से जीवन सार्थक होता है। प्रसिद्ध पर्यटक राहुल सांकृत्यायन ने विश्व के अनेक स्थानों का पर्यटन किया था। पर्यटन की प्रेरणा देते हुए वह कहते हैं

सैर कर दुनियाँ की गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ।
जिन्दगानी भी मिली तो नौजवानी फिर कहाँ।।

Edit with WPS Office

लेखक और उनके साथी कौसानी पहुँचे तो उनके चेहरे पीले क्यों पड़ गए थे?

उत्तर:

कौसानी को रास्ता भयानक मोड़ों वाला तथा कष्टप्रद था। नौसिखिया ड्राइवर लापरवाही से बस चला रहा था।

प्रश्न

“मेरे चेहरे पर निरन्तर घनी होती हुई उत्सुकता को ताड़कर शुक्ल जी ने कहा” लेखक के चेहरे पर उत्सुकता किस कारण प्रकट हुई थी?

उत्तर:

Edit with WPS Office

लेखक शुक्ल जी के साथ आए दुबले-पतले युवक का परिचय जानने को उत्सुक था।

प्रश्न

कोसी किसका नाम है?

उत्तर:

कोसी एक नदी तथा एक स्थान का नाम है।

प्रश्न

कोसी से कौसानी जाने वाली सड़क को 'अजगर- सी' क्यों कहा गया है?

उत्तर:

कोसी से कौसानी जाने वाली सड़क टेड़ी-मेड़ी, ऊपर-नीचे रेंगती हुई और करीली थी।

प्रश्न

Edit with WPS Office

कौसानी जाते समय लेखक के चेहरे पर अधैर्य, असंतोष तथा क्षोभ क्यों झलक उठा था?

उत्तर:

लेखक को बताया गया था कि कौसानी बहुत सुन्दर स्थान है। कष्टप्रद, टेढ़े-मेढ़े रास्ते देखकर तथा बर्फ का नामोनिशान न पाकर लेखक के मन में अधैर्य, क्षोभ और असंतोष पैदा हो गया।

प्रश्न

कौसानी कहाँ बसा है?

उत्तर:

कौसानी सोमेश्वर घाटी के उत्तर दिशा में स्थित पर्वतमाला के शिखर पर बसा है।

प्रश्न

शिखर पर जमी हुई बर्फ को देखकर अकस्मात् लेखक के

Edit with WPS Office

मन में क्या विचार आया?

उत्तर:

लेखक के मन में अचानक विचार उठा कि यह बर्फ हिमालय की चोटियों पर कब से जमी है? क्या मनुष्य के पैर कभी वहाँ पड़े हैं?

प्रश्न

सूरज डूबने लगा तो ग्लेशियरों में क्या बहने लगा?

उत्तर:

सूरज डूबने लगा तो ग्लेशियरों में पिघली केसर बहने लगी।

प्रश्न

चाँदनी रात में डाकबंगले के बरामदे में विचारमग्न लेखक

Edit with WPS Office

की तंद्रा कैसे टूटी?

उत्तर:

लेखक विचारमग्न था। तभी सेन रवीन्द्रनाथ टैगोर की कोई कविता गाने लगा। उसे सुनकर लेखक की तंद्रा टूट गई।

प्रश्न

“कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो”-यह पंक्ति किसने लिखी है?

उत्तर:

यह पंक्ति भक्त कवि तुलसीदास ने अपनी ‘विनयपत्रिका’ में लिखी है।

प्रश्न

“और यकीन कीजिए, इसे बिलकुल ढूँढ़ना नहीं पड़ा। बैठे-

Edit with WPS Office

बिठाये मिल गया।" लेखक ने यह किसके बारे में कहा है?

उत्तर:

लेखक ने यह बात अपने निबंध के शीर्षक के बारे में कही। लेखक अपने एक गुरुजन उपन्यासकार मित्र के साथ पान की दुकान पर खड़ा था। वहाँ एक बर्फ वाला ठेले पर बर्फ की सिल्लियाँ लाद कर लाया। बर्फ में से भाप उड़ रही थी। लेखक के मित्र अल्मोड़ा के रहने वाले थे। वे बोले-यह बर्फ तो हिमालय की शोभा है। सुनते ही लेखक ने तुरन्त अपने लेख' का शीर्षक 'ठेले पर हिमालय' रख दिया।

प्रश्न

कोसी तक लेखक किस प्रकार पहुँचा? उसको कोसी में क्यों उतरना पड़ा?

उत्तर:

लेखक नैनीताल से रानी खेत, मझकाली होते हुए कोसी पहुँचा। रास्ते में भयानक मोड़ थे। रास्ता बहुत कष्टपूर्ण,

Edit with WPS Office

सूखा और कुरूप था। पहाड़ सूखे थे। रास्ते में कहीं पानी का निशान भी नहीं था। कहीं हरियाली भी नहीं थी। ढालों को काटकर बनाया गया रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा था। वहाँ से एक सड़क अल्मोड़ा तथा दूसरी कौसानी जाती थी। लेखक की बस अल्मोड़ा जा रही थी। उसको कौसानी जाना था। अत: वह कोसी उतर गया।

प्रश्न

शुक्ल जी कौन थे? उनके बारे में लेखक ने क्या कहा है?

उत्तर:

शुक्ल जी ने लेखक को कौसानी जाने के लिए उत्साहित किया था। वह भी कौसानी जा रहे थे। कोसी में बस से उतरे तो उनका चेहरा प्रसन्नता से भरा था। उनके चेहरे पर कभी थकान और सुस्ती दिखाई नहीं देती थी उनको देखते ही लेखक की थकान और सुस्ती दूर हो गई। लेखक ने कहा है कि शुक्ल जी जैसा सफर का साथी पिछले जन्म के पुण्यों से मिलता है।

Edit with WPS Office

प्रश्न

शुक्ल जी के साथ बस से कोसी में उतरने वाला व्यक्ति कौन था?

उत्तर:

शुक्ल जी के साथ एक अन्य व्यक्ति भी कोसी में बस से उतरा। वह दुबला-पतला था। उसका चेहरा पतला और साँवला था । उसने एमिल जोला-सी दाढ़ी रखी हुई थी। वह ढीला-ढाला पतलून पहने था। उसके कंधे पर जर्किन पड़ी थी। उसके बगल में थर्मस अथवा कैमरा अथवा बाइनाकुलर लटका हुआ था। वह मशहूर चित्रकार सेन था। उसका स्वभाव मधुर था।

प्रश्न

“कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया।” उस दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

उत्तर:

कोसी तक का रास्ता अच्छा नहीं था। कोसी से बस चली

Edit with WPS Office

तो रास्ते का दृश्य बदल गया, पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसो बह रही थी। उसके किनारे छोटे-छोटे गाँव और हरे-भरे खेत थे। सोमेश्वर की वह घाटी बहुत सुन्दर थी। मार्ग में कोसी नदी तथा उसमें गिरने वाले नदीनालों के पुल थे। एक के बाद एक बस स्टेशन, पहाड़ी, डाकखाने, चाय की दुकानें आदि भी रास्ते में मिले। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरी। सड़क टेढ़ी-मेढ़ी, ऊँची-नीची तथा केंकरीली थी। उस पर बस धीरे-धीरे चल रही थी। रास्ता सुहाना था।

प्रश्न

"हम अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे।" लेखक को किस विषय में संशय था?

उत्तर:

कोसी से अठारह मील दूर निकल आने पर भी लेखक को कहीं बर्फ दिखाई नहीं दी थी। कौसानी केवल छ: मील दूर हो रह गया था। लेखक को बताया गया था कि कौसानी बहुत सुन्दर है। वहाँ स्विट्जरलैंड का आभास होता है।

Edit with WPS Office

वह कश्मीर से अधिक मनोहर है। वह इतनी प्रशंसा के योग्य नहीं था। लेखक को संदेह था कि वहाँ बर्फ दिखाई देगी भी या नहीं। यही बात लेखक ने शुक्ल जी से कही थी।

प्रश्न

बिलकुल ठगे गए हम लोग"- लेखक को क्यों लगा कि उसको ठगा गया है?

उत्तर:

बस कौसानी के अड्डे पर रुकी। वह एक छोटा और उजड़ा -सा गाँव था। वहाँ बर्फ का नामोनिशान भी नहीं था ! लेखक बर्फ को निकट से देखने के इरादे से कौसानी गया था। उसने कौसानी की बहुत तारीफ सुनी थी। उसके मित्रों ने उसको कश्मीर से भी सुन्दर बताया था। अत: लेखक को लगा कि उसने लोगों की बातों पर विश्वास करके गलती की। उसके अनुसार वह बुरी तरह ठगा गया था।

Edit with WPS Office

प्रश्न

‘अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया।” कौन स्तब्ध खड़ा रह गया तथा क्यों?

उत्तर:

लेखक जब कौसानी के बस-अड्डे पर बस से उतरा तो वह अत्यन्त खिन्न था। जहाँ वह बस से उतरा था, वहाँ से उसकी निगाह एक ओर पड़ी। उसने देखा कि सामने की घाटी अपार प्राकृतिक सौन्दर्य से भरी थी। पचासों मील चौड़ी इस घाटी में लाल-लाल रास्ते थे। ये गेरू की शिलाओं के काटने से बने थे। उनके किनारे सफेद थे। उसमें अनेक नदियाँ बह रही थीं। उसमें हरे-भरे खेत थे। पूरी घाटी अत्यन्त सुन्दर थी। लेखक उसे देखता ही रह गया और जहाँ था वहाँ पर ही स्तब्ध खड़ा रह गया।

प्रश्न

कौसानी पहुँचकर लेखक हर्षातिरेक से क्यों चिल्लाने लगा?

Edit with WPS Office

उत्तर:

कौसानी के बस-अड्डे से लेखक ने कल्यूर की सुन्दर घाटी को देखा । दूर क्षितिज के पास कुछ धुंधले छोटे पर्वतों का उसे आभास हुआ। उसके बाद बादल थे। अकस्मात बादलों के बीच उसको कुछ दिखाई दिया। बादल के टुकड़े जैसी कोई अटल वस्तु थी । उसका रंग न नीला था, न रुपहला, न सफेद था। वह तीनों का मिलाजुला रंग था। लेखक ने सोचा-यह है क्या? बर्फ नहीं है तो क्या है? अचानक उसको ध्यान आया कि इसी घाटी के पार हिमालय पर्वत है, जो बादलों से ढका है। वह समझ गया कि उसने बर्फ से ढके किसी छोटे शिखर को देखा है। वह प्रसन्नता के साथ चिल्ला उठा 'बर्फ, वह देखो।'

प्रश्न

एक क्षण के हिम-दर्शन के कारण लेखक की क्या दशा हुई? यदि आप लेखक के साथ होते तो क्या आपकी दशा भी ऐसी ही होती?

उत्तर:

Edit with WPS Office

एक क्षण के हिम-दर्शन का लेखक पर अद्भुत प्रभाव पड़ा। उसका सारी खिन्नता, निराशा और थकावट दूर हो गई। वह बादलों के छटने के बाद आवरणहीन हिमाच्छादित हिमालय को देखने की कल्पना से अत्यन्त रोमांचित हो उठा। उसका हृदय तेजी से धड़कने लगा । यदि मैं लेखक के साथ होता तो संभवत: मेरी दशा भी ऐसी ही होती अथवा.मैं शुक्ल जी की तरह शांत रहता और लेखक के समान उत्तेजित नहीं होता।

प्रश्न

छोटे हिम-शिखर को बादलों ने ढंक लिया तो लेखक तथा उसके साथियों ने क्या किया?

उत्तर:

क्षणभर अपनी झलक दिखाकर हिमावृत्त शिखर गायब हो गया था। लेखक और उसके साथी बर्फ देखना चाहते थे। उन्होंने डाकबंगले में अपना सामान रखा और बिना चाय पिये ही सामने के बरामदे में बैठे रहे। वे एकटक सामने देखते रहे। बादल धीरे-धीरे छैटते जा रहे थे और एक-एक

Edit with WPS Office

करके नए-नए शिखरों पर जमी बर्फ दिखाई दे रही थी। फिर बादल पूरी तरह हट गए और हिम शिखरों की पूरी श्रृंखला दिखाई देनी लगी।

प्रश्न

कौसानी के डाकबंगले से हिमाच्छादित पर्वत शिखरों को देखने के बाद लेखक को किस बात की अनुभूति हो रही थी?

उत्तर:

लेखक ने हिमालय के शिखरों को देखा। उसको अपने माथे पर शीतलता की अनुभूति हो रही थी। उसकी समझ में आ रहा था कि पुराने ऋषि-मुनि हिमालय पर क्यों आते थे तथा यहाँ आने पर दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किस तरह नष्ट हो जाते थे। लेखक के सारे अन्तर्द्वन्द्व, सारे संघर्ष और सारे ताप इन शिखरों को देखकर मिट गए थे।

प्रश्न

Edit with WPS Office

“अकस्मात् एक दूसरा तथ्य मेरे मन के क्षितिज पर उदित हुआ”? कौन-सा दूसरा प्रश्न लेखक के मन में उत्पन्न हुआ? इस प्रश्न का उत्तर क्या आप दे सकते हैं?

उत्तर:

अचानक लेखक के मन में विचार आया कि हिमालय पर जमी बर्फ कितनी पुरानी है। कुछ विदेशियों ने इसको चिरंतन हिम कहा है अर्थात् यह बहुत पुराने समय से हिमालय पर जमी है। लेखक सोच रहा था कि क्या कभी मनुष्यों ने इन शिखरों पर अपने पैर रखे हैं अथवा अनादि काल से हिमालय पर बर्फीले तूफान उठते रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दे सकता। मैं जानता हूँ कि संसार के समस्त पर्वतों में हिमालय पर्वत श्रृंखला नवीनतम है तथा अभी उसके निर्माण की प्रक्रिया चल ही रही है। तथापि यह मनुष्य जाति के धरती पर पदार्पण से भी अधिक पुरातन है।।

प्रश्न 14.

सूर्यास्त के समय हिम शिखरों पर कैसा दृश्य दिखाई दिया?

Edit with WPS Office

उत्तर:

सूरज डूबने लगा। उसकी पीली-पीली किरणें हिमालय पर पड़ रही थीं। धीरे-धीरे ग्लेशियरों के श्वेत हिम का रंग बदल रहा था। उनमें पीली केसर बहती प्रतीत हो रही थी। बर्फ का रंग सफेद से लाल हो गया था। उसमें लाल कमल खिले हुए प्रतीत हो रहे थे। पूरी घटी गहरे पीले रंग में रँग गई थी।

प्रश्न

चन्द्रमा के प्रकाश में आरामकुर्सी पर बैठे हुए लेखक ने हिमालय से प्राप्त किस प्रेरणा का उल्लेख किया है?

उत्तर:

चन्द्रमा निकलने पर आरामकुर्सी पर बैठकर लेखक हिमालय के शिखरों को देख रहा था। उसके मन में कविता की कोई भी पंक्ति उत्पन्न नहीं हो रही थी। यह छोटी बात थी। वह हिमालय की महानता के बारे में सोच रहा था । हिमालय उसको ऊपर उठने और महान् बनने की प्रेरणा दे रहा था। वह उसे स्नेहभरी चुनौती दे रहा था-

Edit with WPS Office

हिम्मत है तो मेरे समान ऊँचे उठो, महान बनो।

प्रश्न

हिमालय को देखकर सबसे ज्यादा खुश कौन था? उसकी खुशी के बारे में बताइए।

उत्तर:

हिमालय को देखकर चित्रकार सेन सव्रसे ज्यादा खुश थी। वह बच्चों की तरह चंचल और चिड़ियों की तरह चहकता हुआ दिखाई दे रहा था। वह कवीन्द्र रवीन्द्र की कोई कविता गा रहा था। अकस्मात् वह शीर्षासन करने लगा। कहने लगा-'सब जीनियस लोग शीर का बल खड़ा होकर दुनियाँ को देखता है। इसी से हम भी शीर का बल हिमालय देखता है।

प्रश्न

दूसरे दिन लेखक ने किस स्थान की यात्रा की?

उत्तर:

Edit with WPS Office

दूसरे दिन लेखक सभी के साथ घाटी में उतरकर बारह मील दूर बैजनाथ पहुँचा। वहाँ गोमती नदी बहती थी। गोमती नदी की जलराशि अत्यन्त स्वच्छ थी। उसमें हिमालय पर्वत की बर्फ से ढंकी हुई चोटियों की छाया पड़ रही थी। लेखक ने पानी में बनी हिमालय की चोटियों को जी भरकर निहारा। वह उस दृश्य में डूबा रहा। उसने सोचा कि इन चोटियों पर कभी वह पहुँचेगा भी अथवा नहीं?

प्रश्न

लेखक के मन में आज भी क्या पीर उठती है? वह उसको भुलाने के लिए क्या करता है?

उत्तर:

हिमालय की उन बर्फीली चोटियों की स्मृति आज भी जब लेखक को होती है तो उसका मन एक अज्ञात पीड़ा से भर उठता है। वह उस पीड़ा से मुक्ति चाहता है तो ठेले पर लदी हुई बर्फ की सिलों को देखकर अपना मन बहला लेता है। उनको देखकर हिमालय की बर्फ की याद ताजा कर लेता है। ठेले पर हिमालय' कहकर वह हँसता है।

Edit with WPS Office

उसकी यह हँसी उस पीड़ा को भुलाने का बहाना है।